The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 4 | April 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

लोरी गीतों में लोक की अभिव्यंजना: संदर्भ - बंगला, असमिया और न्यिशी

डा0 मुन्नी चौधरी
एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, नागालैंड विश्वविद्यालय
कोहिमा परिसर, मेरिमा – 797004, कोहिमा, नागालैंड
muchajoy@gmail.com

डा0 प्रसेनजित पाल
सहायक प्रोफेसर, शिक्षक शिक्षा विभाग, नागालैंड विश्वविद्यालय
कोहिमा परिसर, मेरिमा – 797004, कोहिमा, नागालैंड
prasenjit@nagalanduniversity.ac.in

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.15382091

दुख और सुख एक-दूसरे के पूरक हैं। जहां दुख है वहां सुख भी है। जितना बड़ा दुख है, उतनी ही बड़ी सुख की चाह है। भारतीय समाज दुख के अंतहीन स्तरों व ढेर से अटा-पड़ा है। इसीलिए दुख को भुलाने के लिए गरीब, मजदूर व बेबस समाज के लोगों ने गीत का ईजाद किया। गीत व मनोरंजन के साधनों की यहां कमी नहीं है। सुख के क्षणों के गीत तो हैं ही, यहां मौत के वक्त भी गीत गाये जाने की परंपरा है। ससुराल से घर लौटकर आनेवाली बेटी भी रोती हुई गाती है और अपना दुखड़ा गाकर पिता को सुनाती है। भारत में ऐसे बेबस और दुखी लोगों की संख्या सर्वाधिक है। मुट्ठी भर लोग आम जनता को लूटने के लिए हजारों प्रकार के शोषण को ईजाद कर रखा है। सुख तो क्या मौत के वक्त भी लूटते हैं। यहां तक कि पैदा होने से पूर्व और मौत के बाद वर्षों तक लूटते रहते हैं। आम जन की लूट ही व्यवस्था है। आल इंडिया रेडियो की स्थापना सूचना देने के लिए हुई थी। वह सूचनाएं प्रसारित करता था। लेकिन श्रोताओं ने बताया कि उन्हें सूचनाएं नहीं चाहिए, गीत सुनाएं। भारत की जनता ने एकमुश्त स्वर में मांग की कि उन्हें सूचनाएं न देकर गीत सुनाएं। थक-हार कर आल इंडिया रेडियो को सूचना कम गीत ज्यादा प्रसारित करना पड़ा। प्रसारण में गीत के आते ही लोगों ने उसे हाथों-हाथ लिया। फिर तो रेडियो और श्रोताओं का साथ इस कदर दीवानगी की हद तक पहुंचा कि सोते-जागते, उठते-बैठते, खेत-खलिहान से लेकर यात्रा करने तक रेडियो उनके हाथ में लटकता रहता। सोते वक्त सुमधुर गीतों की बौछार लग जाती थी। दीवानगी ऐसी कि बिस्तर पर लेटकर रेडियो आन कर देते थे और कम स्वर में कान के पास रेडियो रखकर सो जाते थे। सुमधुर गीतों के आगोश में लोग मीठी-गहरी नींद सोते थे। वर्षों तक मैंने भी यही किया है। गेहूं की कटाई, धान की रोपाई, आलू की गोड़ाई, धान की निराई, दौंरी करते, सुबह-शाम टहलते, चौराहे की बैठकी, गर्मी में बर के पेड़ के नीचे लेटे-बैठे, ताड़ी पीते, हर वक्त रेडियो साथ होती ही थी। रेडियो पर हमेशा सुमधुर गीतों का प्रसारण होता रहता था और व्यक्ति अपने काम में व्यस्त गानों की स्वर-लहरियों में समाया होता था। गीत दुखी मन को सहलाने, गुदगुदाने व वर्तमान में लाकर भूत-भविष्य से मुक्त करने का काम करता है। यही व्यक्ति के लिए सबसे बड़ा मनोरंजन का साधन था। गीत सुनकर दिल और दिमाग दोनों स्वस्थ रहता था। वह वयक्ति को सुकून से भर देता था। गीत आज भी भारत के आमजन के गले का कंठहार बना हुआ है। मोबाइल आ जाने के बाद गीतों और चित्रों का साथ हमसफर-जैसा हो गया है।

गीतों में लोरी गीतों का अपना स्थान है। दरअसल, लोरी गीतों से बच्चों को सुलाने व उनका मनोरंजन किया जाता है। बच्चे नहीं चाहते कि उनके मां-बाप व उनकी देखरेख करने वाला उनसे दूर हो। वे सदैव उनका साथ चाहते हैं। बालमन पेट भर जाने के बाद या तो सोता है या खेलता है। इसके वह किसी न किसी के पास रहना अवश्य चाहता है। कहने का मतलब है कि बच्चे किसी न किसी के पास अवश्य रहते हैं। ऐसे में, मेहनत-मशक्कत पर टिका परिवार व समाज अपने कामों को भली-भांति समय पर नहीं निपटा सकता। ऐसे समाजों में स्त्रियां तो पुरुषों से भी ज्यादा व्यस्त रहती हैं। पुरुष तो अपना काम निपटा कर मुक्त हो जाता है, लेकिन स्त्रियां मुक्त नहीं हो पातीं। उन्हें तो घर-बाहर व परिवार, धर्म, समाज – सभी मोर्चों पर मुस्तैदी से जमे रहना होता है। वे तो मशीन बनी रहती हैं या कहें कि मशीन बने ही रहना होता है। ऐसे में, सर्वाधिक परेशान मां ही होती थी। इसीलिए मां अपने बच्चे की देखरेख के लिए किसी को सौंप देती थी। देखरेख कर्ता या बेबी सीटर ही लोरी गीतों का जनक है। बच्चों को शांत रखने व सुलाने के लिए ही बेबी सीटरों ने लोरी रचा व इस्तेमाल किया। कुल मिलाकर, लोरी गीत मेहनतकश अवाम का गीत है। हालांकि अब लोरी गीतों पर संकट के बादल छा गये हैं, जब से मोबाइल आ गया है। अब तो नन्हें बच्चों के हाथ में मोबाइल पकड़ाकर परिवार के सदस्य अपने काम में व्यस्त रहते हैं। हालांकि इसका बुरा असर बच्चों के स्वास्थ्य पर पड़ रहा है।

लोरी गीतों में मेहनतकश अवाम के सुख-दुख, स्थिति, आशा-आकांक्षा, कल्पना आदि जीवन के विविध पहलुओं का चित्रण मिलता है। लोरी गायक-गायिका घर, परिवार व समाज की हर संभव स्थितियों व सुख-दुखों का वर्णन करती है। उसमें बच्चे की आशा-आकांक्षा, सपने, परेशानियां आदि सभी का वर्णन रहता है। उदाहरण के लिए हमने यहां बंगला, असमिया व न्यिशी लोरी गीतों को रखा है। मेरा आलेख इन्हीं लोरी गीतों पर आधारित है। संबंधित लोरी गीतों में लोक की अभिव्यंजना विविध रूपों में हुई है। आइए देखते हैं –

खोका / खोखा प्रचलित शब्द का प्रयोग – बंगाल के लिए खोका, खोखा, नुनु, बाच्चा बच्चा का पर्यायवाची शब्द है। ऐसा शब्द हर मेहनतकश समाज में देखने को मिलता है। यह नाम किसी बच्चे का नहीं है, बल्कि किसी भी बच्चे के लिए प्रयोग किया जाता है। वहां किसी भी बच्चे को खोखा या खोका कह सकते हैं। हालांकि कोई अपने बच्चे का नाम खोका रखना चाहे तो रख सकता है। यह शब्द बंगाल में बहुत प्रचलित है। बहुत सारे बंगला लोरी गीतों में 'खोका' शब्द आया है, जो बच्चा का पर्याय है, जैसे –

खोका घुमालो पारा जुरालो
बोरगी एलो देसे
बूलबुली ते धान खेये छे
खाजना देबो किसे
धान फुरालो पान फुरालो
खाजनार उपाये की
आर कोटा दिन सोबुर कोरो
रोसुन बुने छी
खोका...[1]

खोका सोया टोला चुप्प
दुश्मन आया देस में
बूलबुली चिड़िया धान खाया

मलगुजारी कहां से दूंगी
धान भी खतम पान भी खतम
थोड़े दिन सबर करो
हमने रसुन बोया है
खोका.. (अनुवाद – प्रसेनजित पाल)

चांद मामा का पर्याय – चांद मामा का पर्याय है। वैसे, मामा और चांद दोनों ही अपनी प्रकृति में एक-से हैं। चांद अपनी शीतलता सभी को एक समान प्रदान करता है - चाहे कोई अमीर हो चाहे गरीब। मेहनतकश अवाम प्रकृति की खुली गोद में जीता है। चांद प्रकृति के सभी उपादानों में सर्वाधिक सुकूनदायक है। जहां सूरज अपनी ताप से धरती के जीवों को जलाता है, वहां चांद किसी को तपाता नहीं, बल्कि सभी को रात अंधेरे में भी रोशनी प्रदान करता है। उसकी शीतल रोशनी सभी को सफेद चादर में लपेटकर सुकून और शांति प्रदान करती है। रिश्ते का मामा भी श्रमिक समाज और लोक में सर्वाधिक सम्मानजनक व निरीह व्यक्ति है। वह अपने भांजे-भांजियों को समान दृष्टि से देखता है। मामा उनसे मिलने कभी-कभार ही आता है, लेकिन चांद की तरह सभी की खैर मनाता है। वह हमेशा देनेवाला है, किसी से कुछ लेता नहीं। बंगला लोरी गीत में गायिका कहती है कि चांद मामा आओ और बच्चे के माथे पर टीका लगा दो। ऐसा करने से बच्चे की सुंदरता भी बढ़ेगी और किसी की बुरी नजर भी नहीं लगेगी। देखिए -

आए-आए चांद मामा टीप दिये जा-2
चादेर कोपाले चांद टीप दिये जा-2
माछ काटले मूरो देबो धान कूटले कूरो देबो
कालो गोरू दूध देबो दूध खावार बाटी देबो
आए-आए.................................. [2]

आओ-आओ चंदा मामा टीप लगाओ
मेरे चंदा के माथे पे टीप लगाओ
माछ काटी माथा देंगे, धान कूटि भूसा देंगे
कारी गऊ दूध देंगे दूध पीने कटोरा भी देंगे
आओ.. (अनुवाद – प्रसेनजित पाल)

बढ़चढ़कर स्वागत-सत्कार करना – लोक के लोग घर आये या बुलाये गये किसी को भी अपना समझते हैं। उनकी सेवा-टहल उसी तरह से करते हैं, जिस तरह से अपने को करते हैं। उनमें सेवा-सत्कार की बड़ी भावना होती है। दूसरों की खातिरदारी में कमी नहीं करते। घर में जो कुछ भी उपलब्ध होता है, उसी को लोग मिल-बांटकर खाते हैं। चांद मामा को बच्चे के माथे पर टीका लगाने के लिए बुलाते हैं। बदले में घर वाले उसे मछली का माथा, धान का भूसा, काली गाय का दूध और दूध पीने के लिए कटोरा देने का वादा करते हैं। दरअसल, बच्चा बहुत सुंदर है। माना जाता है कि सुंदर बच्चे को आस-पड़ोस की महिलाओं या पुरुषों की नजर लग जाती है। ऐसा होने पर बच्चा

बहुत रोता है। वह जल्दी चुप नहीं होता। ऐसे में, अगर चांद आकर बच्चे को टीका लगा दे, तो उसे किसी की नजर नहीं लगेगी। बच्चे की मां लोरी गाने वाली मौसी-फूआ को घर बुलाती है। हां, माना कि उसके पास बड़ा खटिया नहीं है, लेकिन छोटी तो है ही! वह उसी छोटी खाट पर बैठायेगी। खाने को उन्हें ढेर सारा पान देगी, इतना कि मुंह भर-भरकर खायेगी। खोखा को नींद नहीं आ रही। बस, आप लोग आकर, लोरी गाकर उसे सुला दीजिए। बच्चे लोरी की गान और हाथों की थपकी से ही सोते हैं। इस बांग्ला लोरी गीत के माध्यम से स्त्री बताना चाहती है कि वह जिसको भी बुलायेगी, सेवा-सत्कार में कमी नहीं रखेगी। यह और बात है कि उसके पास बड़ा खटिया नहीं है। लेकिन कोई बात नहीं, छोटी खाट तो है ही। भाव है कि सम्मान में कमी नहीं रखेगी –

घुम्परानी मासि-पिसी मोदेर बाड़ी एसो
खाट नाए पालेंखो नाए चोख पेते बोसो
बाटा भोरे पान देबो गाल भोरे खेओ
खोकार चोखे घूम नाए घूम दिये जेओ
घुम्परानी ....[3]

लोरी गीत वाली मौसी-फूआ मेरे घर आओ
घर में बड़ा खटिया नईं, छोटे पे बैठो
ढेर सारा पान देंगे भर मुंह खाओ
खोखा की आंखों नींद नईं, नींदि लाओ
लोरी गीत................................. (अनुवाद – प्रसेनजित पाल)

आशावादी चित्रण – लोक के लोग आशावादी होते हैं। उन्हें प्रकृति ने अनेक बार पटखनी दी है। उन्हें अनेक बार मौत के घाट उतारने की कोशिश की है। लेकिन लोक के लोगों की जीवटता और जीने की अदम्य लालसा ने उन्हें हर संकट से उबरने में मदद की है। उनका समूल नाश कभी नहीं हुआ। वे लाखों सालों से अपनी जिज्ञीविषा को सिद्ध करते आ रहे हैं। इसी को चार्ल्स डार्विन ने 'उत्तरजीविता का सिद्धांत' (Survival of the fittest) कहा है। जो संघर्ष करेगा, वही जीयेगा। जो संघर्ष नहीं करेगा, वह मारा जायेगा। दुनिया आज जिस मकाम पर पहुंची है, वह लोक की ही देन है। वे हर परिस्थिति में आशावादी होते हैं। वे कहते हैं कि आशा ही जीवन है। इस बार बूलबुली चिड़िया सारा धान खा गई। इसलिए चिंता बढ़ गई है कि वह टैक्स या मालगुजारी कहां से देगी। वह टैक्स देने में असमर्थ है। हालांकि धान और पान दोनों खत्म हो गये हैं। लोक में धान जहां जीविका का साधन है, वहां पान मान-सम्मान का सूचक है। परिवार के सामने बहुत बड़ा संकट आन पड़ा है। लेकिन कोई बात नहीं। धीरज और आशा का संबल उसके साथ है। वह बच्चे को संबोधित करते हुए कहती है कि उसे सब्र करना चाहिए। संकट के वक्त आशा और धीरज ही सबसे बड़ा संबल होता है। उसे आशा है। उसने अपने खेत में लहसुन बो दिया है। लहसुन की फसल होते ही बुरे दिन खत्म हो जायेंगे और अच्छे दिन लौट आयेंगे। लहसुन एक नकदी फसल है। वह फसल बुरे दिनों को खत्म कर देगा। बंगला के इस लोरी गीत को देखिये – 'खोका घुमालो पारा जुरालो'।

खोका - देश का रक्षक – बच्चे सिर्फ बच्चे नहीं होते। वे बड़े काम के हैं, बड़े महत्वपूर्ण हैं। खोका भी महत्वपूर्ण है। खोका खूब रोता-चिल्लाता है और चारों तरफ दिन-रात फिरकी बना घूमता रहता है। उसके चंचल होने से लोग उसे शैतान कहकर उसकी आलोचना करते

हैं। यह बात उसकी मां को कत्तई पसंद नहीं। आखिर नन्हें बच्चे को - वह भी खोका को कोई बुरा कैसे कह सकता है! बच्चे होते ही हैं चंचल। यही चंचलता उसे बच्चा बनाती है। कोई मां अपने बच्चे की बुराई नहीं सुन सकती। उसका बच्चा बुरा ही सही, बच्चा उसका है और वह राजा बाबू है। कोई उसके बच्चे को पसंद करे या न करे – उसकी बला से। मगर खोका उसका लाड़ला है। खोके की चंचलता से पूरा मोहल्ला अशांत रहता है। जब तक खोका जागता रहता है, तब तक मोहल्ले की शांति भंग हो जाती है। शांति का भंग होना शुभ सूचक नहीं है बल्कि अपशकुन है। जब जब देश का सैनिक सोता है, तब तब देश पर दुश्मनों का आक्रमण होता रहा है। इतिहास इस बात का गवाह है। यहां खोका देश का वीर जवान है। पड़ोसियों को तो चाहिए कि लोग उस पर गर्व करें कि वह जागता रहता है। उसकी उपस्थिति से ही सब चैन की सांस लेते हैं। वह देश-समाज-लोक-मोहल्ला का रक्षक है। इसलिए उसकी मां चाहती है कि लोग खोका को बुरा न कहें। खोका के सोते ही पूरा मोहल्ला शांत हो गया। इससे दुश्मनों को पता चल गया कि सब लोग सो रहे हैं। ऐसी ही स्थिति में देश पर दुश्मनों का हमला होता है। खोका के सोते ही बूलबुली नामक चिड़िया, जो दुश्मन है – का आक्रमण होता है और वह सारा धान खा गई। उस परिवार की दुश्मन है बूलबुली चिड़िया और खोका देश का सिपाही है। उसके जागते रहते कोई भी चिड़िया रूपी दुश्मन वहां पास भी नहीं फटकती। इसलिए खोका पर गर्व करना चाहिए। बंगला लोरी गीत इस बात का प्रमाण है - 'खोका घुमालो पारा जुरालो'। खोका देश का रक्षक है।

पशु-पक्षी लोक के जीवंत पात्र - लोक साहित्य में केवल मनुष्य ही पात्र नहीं होता, बल्कि अपने आसपास की वे सभी चीजें, जीव-जंतु, पशु-पक्षी, जड़-चेतन सभी कुछ पात्र होते हैं। यही बात लोरी गीतों पर भी लागू होती है। व्यक्ति की संवेदना अपने आसपास की सभी चीजों के साथ जुड़ी होती है। गीत गायिका बड़ी पूंछ वाली चिड़िया को बुलाती है और कहती है कि तुम आओ और मेरे खोके के साथ खेलो। बड़ी पूंछ वाली चिड़िया आओ, खाओ, खेलो-कूदो और फिर उसके साथ-साथ तुम भी सो जाओ। दरअसल, लोक में प्रकृति एक खुला आंगन की तरह है और उसमें रहने वाले जीव-जंतु, जड़-चेतन सभी अपने पारिवारिक सदस्य की तरह होते हैं। वैसे भी, भारत में मनुष्यों के साथ जीव-जंतु, पशु-पक्षी, जड़-चेतन, कीट-पतंग, जानवर आदि का संबंध मित्रवत होता है। यहां ये जीव-जंतु खुले में मनुष्यों के साथ रहते हैं, दोनों एक-दूसरे की भाषा, हाव-भाव समझते हैं, सुख-दुख जानते हैं। यही कारण है कि लोक साहित्य में इनका चित्रण हास्यास्पद नहीं, बल्कि स्वाभाविक लगता है। इस गीत में बड़ी पूंछ वाली चिड़िया को बुलाना और उसके साथ बच्चे का खेलना कत्तई अस्वाभाविक नहीं लगता। देखिये –

आए रे पाखी लेज झोला
खोकोन नीय कोर खेला
खाबी-दाबी कोल कोलाबी
खोका के नीय घूम पराबी
आए रे............................[4]

बड़ी पूंछ वाली चिड़िया आओ
मेरे खोका को ले के खेलो
खाओ दाओ गाना गाओ
खोका को ले के सुलाओ

बड़ी................................. (अनुवाद – प्रसेनजित पाल)

नटखट खोके को जीव-जंतुओं द्वारा तंग किये जाने का चित्रण - नटखट खोका निरा बच्चा है। वह सब कुछ सीख रहा है, जैसे छल-छद्म, चालाकी, बचाव करना आदि। बच्चे जब अपने अनुभव से सीखते हैं तो वह सीख टिकाउ और उपयोगी होती है। वह सीख महज किताबी या गप्पबाजी नहीं होती, बल्कि वास्तविकता की जमीन पर खड़ी हुई यथार्थ होती है। इस बंगला लोरी गीत सुनकर सभी लोग हंसेंगे। स्वाभाविक है, खोका चिढ़ेगा। लेकिन वास्तविक बातें भी सीखेगा। खोका मछली पकड़ने गया है। वह नदी खीर नदी है – एकदम पवित्र। वह नदी के किनारे बंसी लेकर मछली पकड़ता है। लेकिन अबोध खोका आसपास के जीव-जंतुओं की चालाकी को समझ नहीं पाता। यही कारण है कि गंदा बेंग उसकी बंसी को लेकर भाग जाता है। उसने जो कुछ भी मछली पकड़ रखी थी, उसे चील लेकर भाग जाता है। ऐसे में, खोका हाथ मलता रह जाता है। इस घटना से खोका जीवन के सबक सीखता है। परिवार के सदस्य खोका के साथ हुई घटना पर हंसते हैं। लेकिन खोका इसी से जीवन जीने की सबक सीखता है। यह खोका का भोगा हुआ यथार्थ है, जो किसी कथा या कोरी किताबी सीख साबित नहीं होगी। अब वह कभी मछली पकड़ने जायेगा तो बेंग और चील दोनों से सतर्क रहेगा और अपनी पकड़ी हुई मछली को सुरक्षित रखेगा। लोरी देखिये –

खोका गेलो माछ धोरते
खीर नोदीर कुले
छीप नीय गेलो कोला बेंगे
माछ नीय गेलो चिले[5]

खोका माछ धरने गया
खीर नदी के किनारे
बंसी ले गया गंदा बेंग
मछली ले गया चील (अनुवाद – प्रसेनजित पाल)

भविष्य की सुखद योजना – लोक में बच्चों को सिखाने के अनेक तरीके हैं। वर्तमान स्थिति माना कि बहुत बुरी है, लेकिन भविष्य बेहतर होगा। गीत गायिका बेहतर करके दिखाने के लिए कटिबद्ध भी है। इससे बच्चे वर्तमान की संकटपूर्ण स्थिति को भूलकर भविष्य की आशा और बेहतरी के सपने में खुश होकर सो जाते हैं। सकारात्मक भविष्य की आस से चित्त प्रफुल्लित हो जाता है और मन एक नई ऊर्जा से भर जाता है। बच्चा सुकून का अहसास करता है और सो जाता है। इस तरह की योजना से न केवल बच्चा आशावादी हो जाता है, बल्कि गीत गायक या गायिका भी आशान्वित हो सुख का अहसास करता है। असमिया के इस लोरी गीत में गायिका कहती है कि उसके बच्चे सोयेंगे। वे सब मिलकर आंगन में बेर लगाएंगे। बेर के फल पककर आंगन में गिरेंगे और फिर उसके बच्चे उस पके बेर को खाएंगे। इस तरह बच्चा और गीत गायक या गायिका दोनों बेहतर भविष्य की आशा में सुकून महसूस करते हैं। बच्चा भविष्य की सुखद योजना में चैन की नींद लेने लगता है। गीत देखिये –

आमार मइना शुव ए

बारीते बगरी रूव ए
वारीरे बगरी पकि सरि जाव
आमारे मइनाक बुटलि खाव[6]

हमारे बच्चे सोएंगे
आंगन में बेर लगाएंगे
उसके पके बेर गिरेंगे
हमारे बच्चे पके बेर खाएंगे (अनुवाद – महबूब द्दौला अहमद)

भय-मुक्त कर सुलाना – बच्चे रात में डरते हैं, बल्कि उन्हें डराया जाता है। डर और भय दिखाते-दिखाते बच्चे डरने लगते हैं। उन्हें रात, भाकुर, सियार, फेकरनी, भूत, चुड़ैल आदि जीव-जंतुओं व भूत-प्रेतों से डरना सिखाया जाता है। इस डर का परिणाम होता है कि बच्चे मां की गोद या चादर में छिपकर सो जाते हैं। इससे बच्चे आगे चलकर डरना सीख जाते हैं तो दूसरी ओर परिवार के सदस्यों को काम निपटाने का समय मिल जाता है। दूसरी बात, लोक-जीवन में जो कुछ भी वर्तमान में होता है, बच्चे वही सीखते हैं। असमिया के इस लोरी गीत में बच्चे को सुलाने के लिए गीत गायक बता रहा है कि सियार, तुम तो रात में न ही आना। यदि आने की गलती की तो उसका कान काटकर दीआ जला देगा। वह बुरा है इसलिए उसका कान काट लेगा। लेकिन कटे कान से दीआ जलाकर रोशनी पा लेगा और इस तरह रात के अंधेरे और सियार से मुक्ति पा लेगा। दिन व रोशनी के उजाले में डरने की कोई बात नहीं। सियार के माथे पर मरुआ का फूल है। उसे उसी फूल से जल्दी से पहचान लिया जाता है। अब गायक ने जैसे ही सुनाकर सियार को हिदायत दी, वह भाग गया और रतनपुर नामक जगह पर पहुंच गया। कुल मिलाकर, बच्चा भयमुक्त होकर सो सकता है। अब उसे डरने की जरूरत नहीं है। गीत देखिये –

सियाली ए नाहिवि राति
तोरे कान काटि लगाम बाति
सियाली मूरते मरुवा फूल
सियाली पालेगै रतनपूर[7]

सियार तो रात में मत आओ
तुम्हारे कान काट दीआ जलायेंगे
सियार के माथे पे मरुआ फूल
भाग के पहुंचा रतनपूर (अनुवाद – महबूब द्दौला अहमद)

मनचाही वस्तुओं का प्रलोभन देकर सुलाना – बच्चा सो नहीं रहा है। वह रोये जा रहा है। बच्चे के माता-पिता भी घर पर नहीं हैं। इसलिए गीत गायिका उसे बता रही है कि वह सो जाये। उसके लिए उसके माता-पिता दूर से तोरुंग, नाई और दासा के फूल लेकर आ रहे हैं। वे चिककबरा सुअर भी ला रहे हैं। वह बताती है कि यदि वह सो जाता है तो ये सारी चीजें उसे ही मिलेंगी। हां, नहीं सोयेगा तो उसे कुछ भी नहीं मिलेगा। उसका अच्छा बच्चा, सो जा। लोक के लोगों के लिए मनचाही चीजों में आसमान के तारे जैसी असम्भव चीजें नहीं आतीं।

उनके लिए तो रोजमर्रा की जरूरत की चीजें ही मनचाही वस्तुएं हैं। वे सारी चीजें उपयोगी और दैनिक जरूरत की चीजें हैं। दूसरी बात, वह बताती है कि उसका बच्चा अच्छा बच्चा है। इसलिए वह सोएगा। सभी अच्छे बच्चे सोते हैं। वह भी सोएगा। गीत देखिये -

आमु का आसु का
आन बुले आब बुले न्योदी ते तोरुंग अपुंग ङाम
आमिंग बालायिल हाद युके
आमु का आसु का
सो जा मेरे बच्चे, सो जा
माँ-पिताजी दूर से खेलने के लिए 'तोरुंग' फूल ला रहें हैं
सो जा मेरे बच्चे, सो जा

आन बुले आब बुले नाई अपुंग हाम
आमिंग बालायिल हाद युके
आमु का आसु का
माँ-पिताजी दूर से खेलने के लिए 'नाई' फूल ला रहें हैं
सो जा मेरे बच्चे, सो जा

आन बुले आब बुले न्योदी ते इरि तागाबो ञी
पाताप लयला बाल अंग्दयुके
आमु का आसु का
माँ-पिताजी दूर से चितकबरा सुअर मार कर ला रहें हैं
सो जा मेरे बच्चे, सो जा

आन बुले आब बुले दासा आपु ङाम
अमिंग बालायिला न्योदी ते अंग्दयुके
आमु का आसु का
माँ-पिताजी दूर से खेलने के लिए 'दासा' फूल ला रहे हैं
सो जा मेरे बच्चे, सो जा

न्योदी ते युबान्यलो दिंगलूम ङाम जीतान युके
युमा बालो जीराम युके
आमु का आसु का
तुम नहीं सोओगे तो तुम्हें ये सारी चीजें नहीं देंगे। तुम सो जाओगे तो तुम्हें ये सारी चीजें देंगे

न्यिशी भाषा में लोरी गीत गायक या गायिका को 'नबंग' (Baby sitter) कहते हैं। नबंग ही वहां बच्चों की देख-रेख करता है। माता-पिता अपने बच्चे को नबंग के हाथ में सौंपकर जाते हैं। नबंग अनेक प्रकार से बच्चे को सुलाने का प्रयास करता / करती है। उसकी और बच्चे की समझ में फूल व सुअर ही सर्वाधिक उपयोगी व महत्वपूर्ण चीजें हैं।

लोक साहित्य में लोक की अभिव्यंजना विविधांगी और बहुरंगी है। लोक इतना विशाल, गहरा व विविधतापूर्ण है कि उसकी तुलना में कोई भी खास साहित्य कमतर है। उस लोक की जितनी भी तारीफ करें और लिखने की कोशिश करेंगे – कम ही होगा। साहित्य का इतना विशाल भंडार किसी भी खास साहित्य में उपलब्ध नहीं है। दूसरी बात, लोक साहित्य की भाषा-शैली व शब्द-अर्थ में जितनी बोधगम्यता व गहराई है – वह अतुलनीय है। सूक्ष्म व गूढ़ भावों की अभिव्यक्ति के शब्द लोक व लोक साहित्य में जितने उपलब्ध हैं – उतने और कहीं नहीं। इसलिए अगर हम लोक को सागर कहें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। आप जितना ही लोक का अवगाहन करेंगे, उतना ही चमत्कृत होंगे व हीरे-जवाहरात जैसी बहुमूल्य चीजें पायेंगे। मैं समझता हूं कि खास साहित्य लोक का महज दशांश ही है। हालांकि अब लोक के लोग खास साहित्य की ओर बढ़ रहे हैं, जो उन्हें थोड़े में ही सिमट कर रह जाने जैसा है। लोक साहित्यकार को नाम नहीं चाहिए था। उन्हें तो लोक का लोग-समाज ही प्रेय था, 'हम' ही सिद्ध था, 'मैं' नहीं। इसीलिए वहां 'मैं' नहीं मिलता और न ही 'मैं' के अर्थबोध में सिमट कर रहने की प्रवृत्ति मिलती है। लोरी गीत महासमुद का एक नद मात्र है।

संदर्भ सूची –

- https://www.youtube.com/redirect?event=channel_header&redir_token=QUFFLUhqa0RfRlFfQzRNeElWYjVvdW9oaG9UWG1WR3dLQXxBQ3Jtc0ttaXVEaUVVTGVob1hQQVNvX3Axc3hIaXRiR3N3X2Y2dTFqOG9GUklZZm54UnVUUHZxeVhVQVpMVTNybTFZc0JGbVVwT2V6QVVmbEFXcGtRNFVwTENjLU4xcHFfclhMeTdVTWxKMl9MX0FjM2thVXFfaw&q=www.infobells.com
- https://www.youtube.com/redirect?event=channel_header&redir_token=QUFFLUhqbXNyOGpyQXFERGt5cElfa2J2QW1vSVR6ODBlZ3xBQ3Jtc0tuWkNEU2NTd2tXTzkzMkVjeDFQTWkzVjF3MWUwaUwtYlVoWGpiVTNPOEQwaDhFWXVZU0Y2QnFudnhVT1MyckEtRkFDQnhDTm94RTNmWFJwaldpUTNSeHFXQ09FT3BlU2RwSndPTEdSdXhwQjNvZUl4VQ&q=www.infobells.com
- https://www.youtube.com/@kkkidsbangla
- वही
- https://www.youtube.com/redirect?event=channel_header&redir_token=QUFFLUhqbXNyOGpyQXFERGt5cElfa2J2QW1vSVR6ODBlZ3xBQ3Jtc0tuWkNEU2NTd2tXTzkzMkVjeDFQTWkzVjF3MWUwaUwtYlVoWGpiVTNPOEQwaDhFWXVZU0Y2QnFudnhVT1MyckEtRkFDQnhD

Tm94RTNmWFJwaldpUTNSeHFXQ09FT3BlU2RwSndPTEdSdXhwQjNvZUl4VQ&q=www.infobells.com

- http://www.youtube.com/@ranjibdaslsaudiocraft
- https://www.youtube.com/@PublicationBoardAssam